IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा और समाज-सुधार में योगदान

श्रीमति शुचि अरोरा

सहा.प्राध्यापक बी.एड विभाग

डॉ.विजय लाल स्मृति महाविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

सारांश- शोध पत्र में सावित्रीबाई फुले द्वारा महिलाओं की शिक्षा और समाज-सुधार में योगदान का अध्ययन किया गया है। भारत की पहली महिला अध्यापिका और समाज सुधारक सावित्रीबाई फुले का पूरा जीवन महिला अधिकारों के लिए समर्पित रहा है। महिला सशक्तिकरण के लिए काम करने के दौरान उन्हें कड़े संघर्षों को झेलना पड़ा उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने के लिए अथक प्रयास किए और समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे कन्या शिशु हत्या, बाल विवाह, सती प्रथा, छुआछूत आदि के खिलाफ आवाज उठाई। सावित्रीबाई ने अपने जीवन को एक मिशन की तरह जिया तथा पूरा जीवन समाज सेवा में बिता दिया।वे एक कवियत्री भी थी, उन्हें मराठी की आदिकवियत्री के रूप में भी जाना जाता है। अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर 24 सितंबर 1873 को "सत्यशोधक समाज" की स्थापना की। 19वीं शताब्दी में महिलाओं की शिक्षा के लिए तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए वीरांगन सावित्रीबाई फुले ने आवाज उठाई।भारत की पहली महिला शिक्षक तथा सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में इतिहास के पन्नों में सावित्रीबाई फुले का नाम अमिट रहेगा।

शब्द कुंजी:-सावित्रीबाई फुले की भूमिका, सावित्रीबाई फुले एक शिक्षक और समाज सुधारक, सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा में योगदान और सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्य।

परिचय:- सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को नए गांव के सातारा डिस्ट्रिक्ट में एक दलित परिवार में हुआ था, जो कि आज के समय में महाराष्ट्र में स्थित है।उनके पिता का नाम "खंडोजी नेवासे" और माता का नाम "लक्ष्मी नेवासे" था। उनका जन्म एक दलित समुदाय में हुआ था। उनके पिता लड़कियों की शिक्षा के खिलाफ थे, सावित्रीबाई के जीवन में हुई घटना से इस बात की पुष्टि स्पष्ट होती है ,जब बचपन में एक बार वह अंग्रेजी पुस्तक के पन्ने पलट रही थी तभी अचानक उनके पिता ने ऐसा करते हुए देख लिया और वह बहुत ही नाराज हुए तथा पुस्तक को छीनकर खिड़की से बाहर फेंक दिया और उन्हें दोबारा ना पढ़ने के लिए सख्त निर्देश भी दिए, उस समय सावित्रीबाई को पढ़ना भी नहीं आता था और ना ही उनकी उम्र थी कि वह पढ़ाई के महत्व जैसे विषय की गहराई को समझ सके लेकिन कहीं ना कहीं इस घटना ने उनके मन में विद्रोह के बीज बो दिए थे हालांकि उस समय वह शांत रहीं। सावित्रीबाई का विवाह मात्र 9 वर्ष की आयु में सन् 1840 में 13 वर्षीय ज्योतिराव फुले से हुआ था और उनकी कोई संतान नहीं थी उन्होंने एक पुत्र यशवंतराव (जो कि एक विधवा ब्राह्मण के घर में पैदा हुए थे) को गोद लिया था।

सावित्रीबाई फुले की जब शादी हुई तब वह पूर्ण रूप से अशिक्षित थी लेकिन उनके पति ज्योतिराव फुले ने उन्हें घर पर ही शिक्षित किया स्वयं शिक्षित होकर उन्होंने अन्य महिलाओं को पढ़ाने की जिम्मेदारी उठाई यह कार्य निसंदेह सावित्रीबाई के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण था क्योंकि उस समय समाज में महिलाओं को शिक्षित करने का विरोध किया जाता था। समाज की संकीर्ण मानसिकता और चहुं ओर व्याप्त कुरीतियों का विरोध करते हुए सावित्रीबाई फुले आगे बढ़ी, उन्होंने टीचर ट्रेनिंग प्रोग्राम में हिस्सा लिया इसके पश्चात् पहला अमेरिकन मिशनरी स्कूल खोला जो कि अहमदनगर में था तथा दूसरा एक साधारण स्कूल था जो कि पुणे में था वहां पर बच्चों को शिक्षा देने का कार्य प्रारंभ किया इस कार्य में उनके पति ज्योति राव फुले एवं ननंद सगुनाबाई क्षीरसागर ने मिलकर कार्य किया। कुछ ही समय पश्चात् उन्होंने स्वयं का स्कूल प्रारंभ कर दिया। 1851 तक सावित्रीबाई फुले ने पुणे के अंदर ही केवल लड़कियों के लिए तीन अलग-अलग स्कूल बना दिए थे, तीनों ही स्कूलों में कुल मिलाकर लगभग 150 से ज्यादा छात्राएं नामांकित थी। लड़कियों को शिक्षा देने का कार्य उस समय में बहुत ही कठिन कार्य था क्योंकि महिला शिक्षा पर पाबंदी थी।सावित्रीबाई फूले जब स्कूल जाती थी तो विरोधी लोग उन पर पत्थर मारते थे और गंदगी फैंकते थे किंतु समाज के इस विरोध का उन्होंने डटकर सामना किया। 10 मार्च 1897 को प्लेग महामारी के कारण सावित्रीबाई फुले का निधन हो गया।प्लेग महामारी में सावित्री बाई प्लेग मरीजों की सेवा करती थी। वह आखरी सांस तक अपने जीवन के उद्देश्यों को लेकर संघर्षरत रहीं।

उद्देश्य:-

1. सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा में योगदान का अध्ययन किया गया।
2. सावित्रीबाई फुले ने समाज- सुधार में कई योगदान दिये है।
3. समाज पर सावित्रीबाई फुले के प्रभावों का वर्णन किया गया है।

परिकल्पना:-

1. सावित्रीबाई फुले ने महिला शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
2. सावित्रीबाई फुले के कार्यों का समाज पर सकारात्मक प्रभाव है।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह:-

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया गया है, अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है। प्राथमिक डेटा का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक डाटा का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

भारतीय समाज में महिलाओं का महत्व:-

भारत में वैदिक काल में महिलाओं को देवी के रूप में देखा जाता था। वह पढ़ाई में पारंगत थी, काल और कपल की विसंगतियों ने समाज को मर्दाना प्रवृत्ति की ओर मोड़ दिया और समाज में महिलाओं के प्रति नकारात्मक ऊर्जा फैल चुकी थी। उस समय शायद सावित्रीबाई फुले जैसी कोई उत्साही नहीं थी या ऐसे व्यक्तित्व को जन्म देने की सामाजिक पृष्ठभूमि नियति को तैयार करने में लगी हुई थी। पिछली दो शताब्दियों के महिला आंदोलन के इतिहास को देखते हुए सावित्रीबाई फुले का नाम सर्वोपरि है उन्होंने भारतीय समाज में विरोध की आवाज ऐसे समय में उठाई थी जब भारतीय महिलाओं को समाज में मूल लोकतांत्रिक अधिकार भी नहीं मिले थे यह वह समय था जब महिलाएं पितृसत्तात्मक उत्पीड़न और शोषण उनकी आर्थिक निर्भरता और पुरुषों के अधीनस्थ सामाजिक जीवन का नेतृत्व कर रही थी उन्हें अपने समय की एकमात्र महिला कहा जा सकता है जिन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर ना केवल महिला शिक्षा और समाज के उत्थान के लिए सफल प्रयास किए बल्कि तत्कालीन सती प्रथा, बाल विवाह और अशिक्षा और विधवा के खिलाफ भी जमकर संघर्ष किया। जीवन यापन के लिए आवास गृह स्थापित करने जैसे सामाजिक कार्य करते हुए वे क्रांतिकारी दिशा की ओर बढ़े। सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, कवियत्री और वंचितों की एक मजबूत महिला आवाज माना जाता है।

सावित्रीबाई फुले का जीवन संघर्ष:-

सावित्रीबाई पूरे देश की महान महिला बन गई उन्होंने जाति और धर्म की संकीर्णता से ऊपर उठकर देश की सभी दलित, शोषित और उत्पीड़ित महिलाओं के जीवन के लिए काम किया महिलाओं की चेतना में सावित्रीबाई फुले के सफल प्रयासों ने आज विशेष रूप से शिक्षित मध्यमवर्गीय महिलाओं को उन व्यवस्थाओं और पदों पर प्रतिष्ठित किया है, जिनके बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था ।जाति और धर्म की सीमित मानसिकता से परे "सर्वे भवंतु सुखिनः" की सीमा में महान भारत की बेटी को बांधना उनकी प्रशंसा, महानता के साथ न्याय नहीं करता।

आज हम जिस तरह से समाज को देख रहे हैं उसमें कई महान महिलाओं और पुरुषों ने योगदान दिया है ऐसी पहली महिला शिक्षक सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था उन्होंने अपना जीवन वंचित वर्गों विशेषकर महिलाओं और समाज के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया उनका मानना था कि महिलाओं और शोषित, पीड़ित को शोषण मुक्ति और विकास के लिए आत्मनिर्भर होने की जरूरत है जिसमें "शिक्षा" महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फुले दंपति ने जीवन भर महिलाओं ,शोषित व पीड़ितों, दलितों, विधवाओं और बच्चों के उत्थान के लिए बिना किसी भेदभाव के काम किया।उन्होंने खुद ही विधवा ब्राह्मण महिला काशीबाई के बच्चे को गोद लिया और उस दत्तक पुत्र यशवंतराव को डॉक्टर बनाया और अंतरजातीय विवाह करके जाति और वर्ग से परे एक शिक्षित समाज की स्थापना करके एक महान उदाहरण प्रस्तुत किया।

कवियत्री के रूप में सावित्रीबाई फुले:-

मराठी भाषा की आदि कवियत्री के रूप में सावित्रीबाई फुले को जाना जाता है। महिलाओं एवं दलितों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए उन्होंने कई कविताओं का लेखन किया महिलाओं को शिक्षित करने एवं दलितों के उत्थान हेतु कई लेख भी लिखें वह कविता में शूद्रों ओवर महिलाओं को संबोधित करते हुए लिखती हैं-

शुद्र भाई- बहनों को जगाए नींद से ,जागो गुलामी को दूर फेंको

मजबूती से खड़े रहे खड़े हो जाओ षड्यंत्रकारी

प्रतिबंधों के भ्रूण टूट जाओ

आत्मज्ञान पाने का मार्ग प्रशस्त करो, शिक्षा के लिए दृढ़ संकल्प लो तो खड़े हो जाओ

बैरियर के सामने, सीना ताना।

रूढ़ीवादी परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं के खिलाफ सामाजिक सुधार के विचारों को पकड़ना और ले जाना आसान नहीं है हमेशा कठिनाइयां और जोखिम बने रहते हैं हालांकि सफलता की सराहना भी की जाती है। फुले दंपति को सामाजिक कार्यों के लिए भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा समाज के दबाव में उनके ससुर ने उन्हें घर से निकाल दिया सामाजिक कार्यों के कारण उनके विरोधियों ने उनके जीवन को समाप्त की कोशिश की लेकिन वह अपने कार्यों में असफल रहे।

सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्य:-

समाज में समस्त महिलाओं की समस्याओं से दुखी होकर सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं और नवजात बच्चों की सुरक्षा के उद्देश्य से 28 जनवरी 18 सो 53 को शेल्टर होम मेटरनिटी होम खोला और उसका नाम चाइल्ड मर्डर बैन होम रखा और बाद में एक अनाथालय की स्थापना की प्रसूति गृह में उन्होंने 66 महिलाओं को भर्ती कराया था।गर्भवती होने पर आत्महत्या करने जा रही महिला ने अपने मायके में एक ब्राह्मण महिला काशीबाई की डिलीवरी करवाई और उसके बेटे को गोद ले लिया जिसका नाम यशवंतराव रखा गया। उसे शिक्षित कर डॉक्टर बनाया। वर्ष1890 में ज्योतिबा फुले की मृत्यु के पश्चात उनकी चिता सावित्रीबाई फुले ने खुद जलाई थी जो उनकी आधुनिक सोच को दर्शाती है।

सावित्रीबाई फुले की उपलब्धियां:-

- मरणोपरांत इनकी दो कविताओं की किताबों का प्रकाशन हुआ काव्य फुले (1954) और बावनकाशी सुबोध रत्नाकर (1982)
- 1983 में पुणे सिटी कारपोरेशन ने सावित्री बाई का मेमोरियल बनवाया।
- 1998 ,10 मार्च को भारतीय डाकघर ने इन के सम्मान में एक डाक टिकट जारी की।
- 2015 में पुणे विश्वविद्यालय का नाम बदलकर सावित्रीबाई फुले पुणे यूनिवर्सिटी कर दिया गया।
- 3 जनवरी 2019 को सावित्रीबाई के 189 जन्मदिन पर गूगल ने इनका अपने पेज पर गूगल डूडल लगाया।

निष्कर्ष:-

भारत की पहली महिला शिक्षक रूप में सदैव ही सावित्रीबाई फूले का नाम जाना जाएगा। महिलाओं की शिक्षा एवं समाज सुधार के कार्यों में उन्होंने अपने जीवन को समर्पित कर दिया। महिला जो कि स्वयं पिछड़ी जाति से थी उसने स्वयं को शिक्षित कर, महिलाओं को शिक्षा रूपी प्रकाश से प्रकाशित कर जीवन जीने की कला सिखाई। समाज के उत्थान के लिए अपनी अंतिम सांस तक प्रयत्नशील रही।

संदर्भ सूची:-

*खुराना, के. एल.मॉडेम इंडियन, 2002 लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा-3

*मिशेल एस.एम. (संपादक)- आधुनिक भारत में दलित, 1999- विस्तार प्रकाशन, नई दिल्ली

* घड़ियाल रिहाना (संपादक)- भारतीय समाज में महिलाएं एक पाठक ऋषि प्रकाशन,नई दिल्ली

* जोशी तारकीता लक्ष्मणश्रेष्ठ, 1997 पब्लिकेशन डिवीजन, पटियाला हाउस,नई दिल्ली- 110001

* पवार,एन.जी. महात्मा ज्योति राव फूले-भारतीय समाज क्रांति के जनक 1999 पुस्तक एनक्लेव जियान भवन,ओपी शांति नगर, जयपुर 302006

*कीर धनंजय- महात्मा ज्योति राव फूले- भारत क्रांति के जनक 1997, लोकप्रिय प्रकाशन प्रा. लिमिटेड 35-सी पंडित मदन मोहन मालवीय मार्ग, तारदियो, मुंबई 400034

*पाटील, प्रो.पी.जी. महात्मा ज्योति राव फूले ,खंड 2 शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार, मुंबई 400032

*भारत 1996 में घेवर जीएस जाति और जाति, लोकप्रिय प्रकाशन मुंबई

*उपदेश एच.सी. भारत में महिलाओं की स्थिति खंड 2 1991 अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली

पत्र पत्रिकाएं:-

***सुबोध पत्रिका**

*दलित टुडे- संपादक वेद कुमार प्रकाशन-वेद कुमार 18/455 इंदिरा नगर,लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

*मासिक पत्रिकाएं:-हम दलित- संपादक प्रेम कपाड़िया, सोशल एक्शन ट्रस्ट,इंस्टीट्यूशनलरिया, लोधी रोड,नई दिल्ली

*दीनबंधु

*भारतीय समाजशास्त्र में योगदान- (मई-अगस्त) 2001 ऋषि प्रकाशन, नई दिल्ली